प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 6 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

आपको चरित्र पतन का भय है न? ठीक है, छात्र–छात्राओं के स्वतंत्र मिलन से ऐसा भी हो सकता है, किंतु उसी अवस्था में जब उन्हें उचित मार्ग–निर्देशन प्राप्त न हो, जबकि एक–दूसरे को एक–दूसरे से छिपा कर रखा गया हो, तभी जिज्ञासा की उत्सुकता भी अधिक होती है। यह स्वाभाविक है कि मानव मन अप्राप्य रूप वस्तु की ओर अधिक आकर्षित होता है यदि उसे वह वस्तु स्वाभाविक रूप से न प्राप्त हो तो वह अस्वाभाविक रूप से खोजता है, छिपकर प्राप्त करता है। अतः वह पतित हो जाता है। इस प्रकार यदि बचपन से ही छात्र–छात्राएँ साथ–साथ रहें तो उनमें स्वस्थ आकर्षण ही शेष रह जाएगा। इससे बालक–बालिकाएँ परस्पर गुणों का आदान–प्रदान करके अपने–अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सकते हैं। एक–दूसरे को समझकर स्वस्थ समाज की स्थापना कर सकते हैं। सामाजिक धरातल पर वे कहीं अधिक निपुणता प्राप्त कर परस्पर संबंधों एवं सामाजिक एकता को सबल करेंगे।

1. निर्देश शब्द में उपसर्ग बताइए। 2

उत्तर : निर्देश शब्द में उपसर्ग है– निर्।

2. मानव मन के पतित होने का कारण क्या है? 2

उत्तर : मानव मन को जब अप्राप्य वस्तु स्वाभाविक रूप से नहीं प्राप्त होती तो वह उसे अस्वाभाविक रूप से खोजता है, छिपकर प्राप्त करता है। इस कारण वह पतित हो जाता है।

3. छात्र–छात्राएँ अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कैसे कर सकते हैं? 2

उत्तर : यदि बचपन से ही छात्र–छात्राएँ साथ–साथ रहें तो उनमें स्वस्थ आकर्षण ही शेष रह जाएगा। इससे वे परस्पर गुणों का आदान–प्रदान करके अपने–अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सकते हैं।

4. आदान–प्रदान का विग्रह कर समास का नाम भी लिखिए। 2

उत्तर : आदान और प्रदान– द्वंद्व समास।

5. जिज्ञासा शब्द का अर्थ बताइए। 1

उत्तर : जिज्ञासा शब्द का अर्थ है– जानने की इच्छा।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : चरित्र निर्माण।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. पौधे लगाकर माली चला गया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : माली ने पौधे लगाए और चला गया।

2. आँधी आई और आम झड़ गए। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : आँधी आने के कारण आम झड़ गए।

3. परिश्रमी व्यक्ति को सभी चाहते हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जो व्यक्ति परिश्रमी होता है उसे सभी चाहते हैं।

4. बच्चा रोया और चुप हो गया। (रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. उससे दौड़ा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : वह दौड़ता नहीं है।

2. नौकर कपड़े धोता है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : नौकर द्वारा कपड़े धोये जाते हैं।

3. मैं नहीं उठता। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : मुझसे उठा नहीं जाता।

4. अशोक पतंग उड़ा रहा है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : अशोक द्वारा पतंग उड़ाई जा रही है।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. अध्यापिका ने स्वतंत्रता संग्राम की घटना सुनाई।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक (**ने** परसर्ग सहित) **सुनाई** क्रिया का कर्ता।

2. काव्या के पास संगीत की पुस्तक है।

उत्तर : भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, संबंध कारक (परसर्ग – की), **पुस्तक** से संबंध प्रकट करता है।

3. कंगारू बहुत तेज दौड़ते हैं।

उत्तर : रीतिवाचक क्रियाविशेषण, **दौड़ते हैं** क्रिया की दशा प्रकट करता है।

4. नन्हीं पिंकी की गुड़िया बहुत सुंदर है।

उत्तर : गुणवाचक विशेषण, मूलावस्था, स्त्रीलिंग, एकवचन, इसका विशेष्य **पिंकी** है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- $1 \times 4 = 4$

1. वीर और रौद्र रसों के भाव लिखिए।

उत्तर : वीर रस का स्थाई भाव **उत्साह** और रौद्र रस का स्थाई भाव **क्रोध** है।

2. विभाव कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : विभाव दो प्रकार का होता है- आलंबन विभाव और उद्दीपन विभाव।

3. जसोदा हरि पालने झुलावै, इस पंक्ति में किस रस का प्रयोग हुआ है?

उत्तर : वात्सल्य रस।

4. निम्नलिखित काव्यांशों में निहित रस बताइए-

अभी तो मुकुट बँधा था माथ,
हुए कल ही हल्दी के हाथ
हाय रूक गया यही संसार
बना सिंदूर अनल अंगार।

उत्तर : काव्यांश में करूण रस है।

5. **शोक** किस रस का स्थाई भाव है?

उत्तर : **शोक** करूण रस का स्थाई भाव है।

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नाक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बेस्ट और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फौजी वर्दी में मूर्ति को देखते ही **दिल्ली चलो** और **तुम मुझे खून दो** ..... वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज की ही कसर थी जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस शहर से गुजरे और चौराहे पर पान खाने रूके तभी उन्होंने इसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुक भरी मुस्कान फैल गई। वाह भाई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की लेकिन चश्मा रियल।

1. मूर्ति किसकी और कैसी थी? 2

उत्तर : मूर्ति नेताजी सुभाषचंद्र बोस की थी। यह टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची संगमरमर की बनी हुई थी। मूर्ति में नेता जी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कम उम्र के भी लग रहे थे।

2. मूर्ति बनाने का प्रयास कैसा था और क्यों? 2

उत्तर : मूर्ति बनाने का प्रयास सफल और सराहनीय था। कारण यह कि फौजी वर्दी में मूर्ति को देखते ही **दिल्ली चलो, तुम मुझे खून दो**..... आदि नेता जी के उद्बोधन याद आने लगते थे।

3. हालदार साहब जब पहली बार इस शहर से गुजरे और चौराहे पर पान खाने रूके तो उन्होंने क्या लक्षित किया? 2

उत्तर : हालदार साहब जब पहली बार इस शहर से गुजरे और चौराहे पर पान खाने रूके तो उन्होंने लक्षित किया कि नेता जी सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति तो संगमरमर की थी लेकिन उस पर असली चश्मे का चौड़ा-काला फ्रेम लगा था।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. बिस्मिल्लाह खाँ के हाथ से क्या आशय है?

उत्तर : बिस्मिल्लाह खाँ के हाथ से आशय है कि उन्हें शहनाई बजाने का सारा हुनर मालूम है। उनकी फूँक और शहनाई की जादुई आवाज का असर श्रोताओं पर सिर चढ़कर बोलने लगता है। वे ताल और राग के साथ गाते हैं जिससे एक सुरीले संसार का सृजन होता है।

2. पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है?

उत्तर : बालगोबिन भगत कबीरपंथी विचारधारा को अपनाए हुए थे। उन्होंने कबीर को अपना **साहब** माना था। उनके अनुसार आत्मा विरहिणी है। अतः पुत्र की मृत्यु पर उन्होंने पतोहू से

उत्सव मनाने को कहा। गृहस्थ होकर भी उन्होंने कबीर की तरह जीवन बिताया। एक लंगोटी, कनफटी टोपी, रामानंदी तिलक और तुलसी की जड़ों की बेडोल –सी माला पहनी। वे सत्यवादी, फसल पर ईश्वर का अधिकार मान भेंट स्वरूप देकर बचे अनाज को लेकर संतोषपूर्वक जीने वाले, सदा भजन गाने, खँजड़ी बजाने और नियमित दिनचर्या में सदा ईश्वर को भजने वाले व्यक्ति थे।

3. इस पाठ में नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

उत्तर : नवाब साहब ने खीरों को तौलिए से उठाया। फिर सीट के नीचे से पानी भरा लोटा निकाला और दोनों खीरों को खिड़की से बाहर करके धोया। फिर तौलिए से पोंछा। जेब से चाकू निकालकर दोनों खीरों के सिरे काटे और गोदकर झाग निकाला। इसके बाद बहुत ही सावधानी से छीलकर फाँकें बनाईं और करीने से तौलिए पर सजा दीं। फिर उन पर जीरा नमक और पिसी लाल मिर्च बुरक दी। ताजे खीरे की पनियाती फाँकें ऐसी दिख रहीं थी कि किसी के भी मुँह में पानी आ जाए।

4. पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनमें फादर बुल्के का हिंदी प्रेम प्रकट होता है?

उत्तर : अपने विचारों के अनुरूप भारत आकर फादर यहाँ बस गए। उन्हें हिंदी पूरे देश को एकता सूत्र में बाँधने और दृढ़ बनाने वाली भाषा लगी। वे हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे। हिंदी भाषियों के द्वारा हिंदी की उपेक्षा उन्हें गहरा दुख देती थी। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए वे सदा मंच से अकाट्य तर्क देते थे। उन्होंने इलाहाबाद से हिंदी में एम.ए. किया। सन् 1950 में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से शोधप्रबंध **रामकथा : उत्पत्ति और विकास** पूरा किया। **नीला पंछी** के नाम से मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक **ब्लू बर्ड** का हिंदी में रूपान्तरण किया। जेवियर्स कॉलेज रांची में हिंदी और संस्कृत के विभागाध्यक्ष भी बने। अंग्रेजी–हिंदी का एक शब्दकोश तैयार किया। बाइबिल का भी हिंदी में अनुवाद कर भारतवासियों को उसका ज्ञान कराया।

5. शहनाई और काशी के बारे में खाँ साहब के कैसे विचार हैं?

उत्तर : बिस्मिल्लाह खाँ साहब शहनाई और काशी को इस धरती पर सबसे बड़ी जन्नत मानते हैं। इस जन्नत से वे दूर नहीं होना चाहते। मरते दम तक उनसे न काशी छोड़ी जाएगी और न ही शहनाई। काशी की धरती पर उन्होंने शिक्षा पाई, यहीं उन्हें संस्कार मिला, इसलिए उन्हें काशी से बेहद लगाव है।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

हमारैं हरि हारिल की लकरी।

मन क्रम बचन नंद–नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।

जागत सोवत, स्वप्न, दिवस निसि, कान्ह–कान्ह जकरी।

सुनत जोन लागत है ऐसौं, ज्यौं करूई ककरी।

सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।

यह तौ सूर तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।

1. गोपियों ने श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी क्यों कहा है? उन्होंने इस लकड़ी को किस तरह पकड़ा हुआ है? 2

उत्तर : गोपियों ने श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी इसलिए कहा है क्योंकि जिस तरह हारिल पक्षी हमेशा लकड़ी पर ही बैठता है। वह लकड़ी को छोड़कर किसी अन्य वस्तु पर नहीं बैठता, उसके पंजों में हमेशा लकड़ी दबी रहती है। उसी प्रकार गोपियाँ भी हमेशा श्रीकृष्ण का ही ध्यान करती रहती हैं। उनका मन श्रीकृष्ण के सिवा और किसी में नहीं लगता। वे जब भी कुछ सोचती हैं, तो श्रीकृष्ण के बारे में सोचती हैं। उन्होंने श्रीकृष्ण रूपी लकड़ी को मन, क्रम, वचन से अपने हृदय में कसकर पकड़ रखा है।

2. गोपियों को योग का उपदेश कैसा लगता है और क्यों? 2

उत्तर : गोपियों को योग का उपदेश कड़वी ककड़ी के समान लगता है क्योंकि एक तो वे श्रीकृष्ण के प्रेम में आसक्त हैं, दूसरा योग–साधना नीरस होता है। अब सरस प्रेम के आगे नीरस योग में उनकी कोई रूचि नहीं है।

3. गोपियाँ किसे व्याधि मानती हैं? उसे किसे सौंपने का परामर्श देती हैं? 2

उत्तर : गोपियाँ योग और ज्ञान की बातों को व्याधि मानती हैं, वे उसे ऐसे व्यक्ति को सौंपने का परामर्श देती हैं जिनका मन चकरी के समान हो, क्योंकि गोपियों का मन तो चंचल है नहीं, बल्कि दृढ़ है, जो एक बार श्रीकृष्ण में लग गया तो लग गया। अब वह उनसे दूर जाने वाला नहीं है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर : गोपियाँ उद्धव को भाग्यवान कहकर उनके दुर्भाग्य पर व्यंग्य करती हैं कि वे कृष्ण–प्रेम से अछूते रहे। वे प्रेम की पीड़ा के अनुभव को भला कैसे जान सकते हैं। कृष्ण के निकट रहकर भी उनके सुंदर रूप से प्रभावित नहीं हुए, उनके मन में प्रेम नहीं जगा तो प्रेम की पीड़ा से बचकर वे सचमुच भाग्यशाली ही सिद्ध हुए। दुर्भाग्य तो गोपियों का है कि वे श्रीकृष्ण को भूल नहीं पा रही हैं और निरंतर विरह की ज्वाला में जल रही हैं।

2. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन–कौनसे तर्क दिए?

उत्तर : शिवधनुष टूटने पर जब परशुराम अत्यंत क्रोधित हुए तो लक्ष्मण ने कहा कि श्रीराम ने तो इसे नया और मजबूत समझकर छुआ था। यह तो बहुत पुराना और जर्जर था, तभी तो श्रीराम के हाथ लगते ही वह टूट गया। फिर इसमें उनका क्या दोष? दूसरी बात लक्ष्मण ने कही कि बचपन में हमने न जाने कितनी ऐसी धनुहियाँ तोड़ी है, तब तो आप क्रोधित नहीं

हुए। अब ऐसी कौनसी विशेषता है कि आप हम पर क्रोधित हो रहे हैं? इस धनुष के टूटने पर तो हमें कोई लाभ-हानि की बात समझ में नहीं आती।

3. कविता का शीर्षक **उत्साह** क्यों रखा गया है?

उत्तर : कविता का शीर्षक **उत्साह** इसलिए रखा गया है क्योंकि बादल के आने से सभी उत्साहित हो जाते हैं। बादल मन में हर्ष, उल्लास और उत्साह जगाते हैं। शीर्षक **उत्साह** क्रांतिकारी चेतना जगाने के अर्थ में भी उपयुक्त सिद्ध होता है।

4. **छाया मत छूना** कविता में व्यक्त दुखों के कारणो को लिखिए।

उत्तर : **छाया मत छूना** कविता में कवि ने अनेक दुखों को व्यक्त किया है, जिसका मूल कारण है- यथार्थ से भागना। व्यक्ति अपने अभावों और दुखों को याद कर अपने वर्तमान जीवन को और अधिक दुखी और अभावग्रस्त बना लेता है। काल्पनिकता की दुनिया एक छलावा है। वह दुख का कारण बनती है। हर चाँदनी रात के पीछे एक काली रात होती है यानी सुख के पीछे दुख छिपा रहता है।

5. फसल को नदियों के पानी का जादू क्यों कहा गया है?

उत्तर : फसल का उत्पादन नदियों के पानी के बिना असंभव है। नदियों का जल पाकर ही ये फसलें लहलहाती हैं। इसलिए फसल को नदियों के पानी का जादू कहा गया है। अनगिनत नदियों का पानी भाप बनकर उड़ जाता है, जो फिर बादल बनकर सूखी धरती पर बरसता है। जब प्यासी धरती पर पानी बरसता है तब फसल लहलहा उठती है। इसलिए फसल को नदियों के पानी का जादू कहा गया है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए- $3 \times 2 = 6$

1. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथियों के खेलों में गाँव में होने वाले सभी कामों की झलक मिलती है। वे कंकड़, पत्ते, दीयों और टूटे घड़ों के टुकड़ों को इकट्ठा करके खेल खेलते थे। खेती, शादी, मिठाई की दुकान लगाने जैसे खेलों में वे भविष्य में किए जाने वाले कामों को अनुभव करते थे। हमारे खेल और खेलने की सामग्री उनसे भिन्न है। वर्तमान में हम **क्रिकेट, बैडमिंटन** और **हॉकी** जैसे खेल खेलते हैं। इन खेलों में भविष्य के दैनिक जीवन के कामों की झलक नहीं मिलती।

2. प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कौन-कौनसे दृश्य झकझोर गए?

उत्तर : लोंग स्टॉक के रास्ते पर लेखिका ने एक कुटिया में पापों को धोने के लिए घुमाया जाने वाला धर्म चक्र देखा। उन्हें लगा, पूरा भारत वैज्ञानिक उन्नति के बाद भी अंधविश्वासों और पाप-पुण्य की अवधारणाओं में जकड़ा है। लेखिका ने पहाड़ी स्त्रियों द्वारा बच्चों को पीठ पर बाँधकर खतरनाक संकरी सड़कों को चौड़ा करते देखा। कुदाल चलाते और चाय के बगीचों में भी काम करते देखा। लेखिका उनकी कड़ी मेहनत और मातृत्व-भावना को देखकर भावुक हो उठीं। 7-8 साल के बच्चों को तीन-साढ़े-तीन किलोमीटर की चढ़ाई चढ़कर पाठशाला जाते देखकर पढ़ने के प्रति उनकी लगन से प्रभावित हुईं।

3. हमारी पीढ़ी ने प्रकृति की लय, ताल और गति के साथ खिलवाड़ का अक्षम्य अपराध किया है। यह कथन कहाँ तक सत्य है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : हमारी पीढ़ी ने प्रकृति के साथ इस तरह से खिलवाड़ किया है कि इसकी लयामकता बिगड़ गई है और इसका संतुलन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इसके भारी नतीजे भी हमें भुगतने पड़े हैं। धरती के मौसम में निरंतर बदलाव हो रहा है जिसका प्रभाव लोगों के रहन-सहन, अर्थव्यवस्था, भूजल-स्तर आदि पर व्यापक रूप से पड़ा है। यह अक्षम्य अपराध है क्योंकि जब प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया जाता है तो वह किसी-न-किसी रूप से उसका बदला अवश्य लेती है।

खण्ड-घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

(1) आदर्श विद्यार्थी

संकेत बिंदु : विद्यार्थी का अर्थ ✲ गुण ✲ लगन ✲ विनम्रता ✲ अनुशासन ✲ समाज का विकास और देश सेवा ✲ उपसंहार।

(2) खेल और हमारा स्वास्थ्य

संकेत : स्वास्थ्य का महत्व ✲ स्वस्थ रखने के लिए खेल ✲ खेलों से लाभ ✲ उपसंहार।

(3) विद्यार्थी एवं अनुशासन

संकेत : विद्यार्थी शब्द का अर्थ ✲ विद्यार्थी जीवन ✲ अनुशासन ✲ वर्तमान स्थिति ✲ अनुशासनहीनता के कारण ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) आदर्श विद्यार्थी

संकेत बिंदु : विद्यार्थी का अर्थ ✲ गुण ✲ लगन ✲ विनम्रता ✲ अनुशासन ✲ समाज का विकास और देश सेवा ✲ उपसंहार।

विद्यार्थी का अर्थ- विद्यार्थी का अर्थ है विद्या प्राप्त करने का इच्छुक। विद्या का अर्थ केवल पुस्तकों का ज्ञान प्राप्त कर परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं होता, बल्कि अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना होता है।

गुण- पुराणों में कहा गया है कि कौए जैसी चेष्टा, बगुले जैसा ध्यान, कुत्ते की सी नींद तथा संयती, परिश्रमी, कम खाने वाला और घर से मोह नहीं रखने वाला विद्यार्थी विद्या प्राप्त कर सकता है।

लगन- जब तक विद्यार्थी अपने तन मन तथा सभी इन्द्रियों और मस्तिष्क को अनुशासित रखने का अभ्यास नहीं करता, वह आदर्श विद्यार्थी नहीं बन सकता।

विनम्रता– पशु और मनुष्य के बीच की प्रमुख विभाजक रेखा विद्या तथा विवेक ही हैं और विद्या उसे ही मिलती है जो विनम्र हो।

अनुशासन– विद्यार्थी जीवन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की आधारशिला है जिस पर उसके जीवन का महल टिका होता है। विद्यालय ही वास्तव में वह स्थान है जहाँ रहकर एक अच्छा विद्यार्थी अनुशासन के नियमों को जान समझकर उन पर आचरण का अभ्यास करता हुआ अपने भावी जीवन के लिए मार्गदर्शन पा सकता है।

समाज का विकास और देश सेवा– उद्दण्ड, उपद्रवी और कटुभाषी विद्यार्थी न तो गुरूजन का कृपापात्र हो सकता है और न ही उसमें समुचित विद्या प्राप्ति की संभावना होती है। आदर्श विद्यार्थी के लिए अनुशासनप्रिय होना भी आवश्यक है। अनुशासनहीन व्यक्ति देश, जाति, परिवार और अपने आपके लिए भी सदैव हानिकारक सिद्ध होता है।

उपसंहार– अनुशासित विद्यार्थी किसी भी संस्था का गौरव होता है परन्तु दुख की बात है कि आज विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता बढ़ती ही जा रही है। जो संयम, नियम, जिज्ञासा, श्रद्धा तथा सजगता उसमें होनी चाहिए, वह नहीं है। इन सबके अभाव में उसका आदर्श विद्यार्थी होना कभी भी संभव नहीं है।

(2) खेल और हमारा स्वास्थ्य

संकेत : स्वास्थ्य का महत्व ✲ स्वस्थ रखने के लिए खेल ✲ खेलों से लाभ ✲ उपसंहार।

स्वास्थ्य का महत्व– खेलकूद हमारे विकास में कई प्रकार से सहायक होते हैं। कहा गया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। खेलने से शारीरिक विकास होता है। शरीर के कई रोग दूर होते हैं। शरीर में स्फूर्ति और मन में उमंग का संचार होता है। शरीर सुगठित हो जाता है। स्वस्थ व्यक्ति का मन भी स्वस्थ रहता है। खेलकूद बौद्धिक क्षमता में भी वृद्धि करते हैं।

स्वस्थ रखने के लिए खेल– मनोविनोद के विभिन्न साधनों में एक लोकप्रिय साधन है, खेलकूद। क्या बालक, क्या बड़े, जीवन में आई नीरसता को दूर रखने के लिए सभी खेलों की ओर आकर्षित होते हैं। यूँ तो खेल कई प्रकार के होते हैं। घर के भीतर खेले जाने वाले खेल, जैसे– कैरम, लूडो, ताश, शतरंज आदि। घर के बाहर खेले जाने वाले प्रमुख खेल फुटबॉल, बॉलीबॉल, क्रिकेट, टेनिस, बैडमिंटन, पोलो आदि हैं।

खेलों से लाभ– प्रायः सभी खेलों से मानसिक एकाग्रता, निर्णय लेने की क्षमता और सूझबूझ का विकास होता है। शतरंज का खेल मस्तिष्क का श्रेष्ठ व्यायाम है। प्राचीन कथन है केवल काम करते रहने और न खेल पाने के कारण बालकों का उचित विकास नहीं होता। खेलों से बालक में धैर्य, सहिष्णुता, खेलभाव आदि गुणों का विकास होता है। संगठन क्षमता, समायोजन शक्ति, अनुशासनप्रियता, नेतृत्व भावना, पराजय से संघर्ष की प्रेरणा प्राप्त करना आदि गुण खिलाड़ियों में सामाजिकता की भावना विकसित करते हैं।

उपसंहार– खेलकूद में हार–जीत का उतना महत्व नहीं होता है, बल्कि उसमें भाग लेना ही प्रमुख होता है। खेलकूद हमारी मानसिक, शारीरिक और सामाजिक प्रत्येक प्रकार की उन्नति के साधन हैं किन्तु बालकों को हर समय खेलकूद में ही लीन न रहकर अपने विद्याध्ययन पर भी ध्यान देना चाहिए। अध्ययन के साथ ही खेलकूद सोने पर सुहागा सिद्ध होते हैं।

(3) विद्यार्थी एवं अनुशासन

संकेत : विद्यार्थी शब्द का अर्थ ✲ विद्यार्थी जीवन ✲ अनुशासन ✲ वर्तमान स्थिति ✲ अनुशासनहीनता के कारण ✲ उपसंहार

विद्यार्थी शब्द का अर्थ– विद्यार्थी शब्द का अर्थ है विद्या को चाहने वाला अर्थात् विद्या को प्राप्त करने वाला।

विद्यार्थी जीवन– शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का साधन है। इसी कारण विद्यार्थी जीवन को बालक का निर्माण काल अथवा जीवन की आधारशिला कहा जाता है। विद्यार्थी जीवन का मूलमंत्र ही नियम और संयम है। समयबद्ध दिनचर्या विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। समय पर सोना और जागना, नियमित रूप से विद्याध्ययन करना, संतुलित भोजन करना, दुर्व्यसनों से दूर रहना आदि। विद्यार्थी जीवन के आदर्श गुण हैं। आदर्श विद्यार्थी में अनुशासन प्रियता, जिज्ञासु प्रवृत्ति, विनयशीलता, आज्ञाकारिता, परिश्रमशीलता, अपने बड़ों और गुरूजन के प्रति श्रद्धा का भाव जैसे गुणों का होना अनिवार्य है। विद्यार्थी में कौए के समान चेष्टा, बगुले के समान ध्यान, कुत्ते के समान नींद होनी चाहिए।

अनुशासन– अनुशासन विद्यार्थी जीवन का आवश्यक अंग है। अनुशासन का वास्तविक अर्थ है आत्मशिक्षा एवं आत्मावलोकन द्वारा अपनी दूषित एवं विनाशकारी आकांक्षाओं को नियंत्रित करना। अनुशासित जीवन के लिए बहारी नियंत्रण की अपेक्षा आत्मनियंत्रण की अधिक आवश्यकता होती है। अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करना सीखने पर यह अनुशासन बड़े होने पर भी जीवन को नियम बद्ध बनाए रखता है।

वर्तमान स्थिति– वर्तमान स्थिति यह है कि आज विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का स्थान अनुशासनहीनता ने ले लिया है। आज छात्र–छात्रा अनुशासन तोड़ना अपनी शान समझते हैं। कक्षा में न आना, आना तो व्यर्थ की बातें करना, गुरूजनों का अपमान करना, उनकी नकल उतारना आदि सामान्य बातें हो गई हैं।

अनुशासनहीनता के कारण– आज का विद्यार्थी, अनुशासनहीनता, आलसी तथा फैशनपरस्त हो गया है। उसकी इस अनुशासनहीनता का कारण पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव तथा समाज की दोषपूर्ण स्थिति है। पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करके आज का विद्यार्थी पथ भ्रष्ट होता जा रहा है।

उपसंहार– विद्यार्थी अनुशासन का प्रथम प्रशिक्षण अपने घर परिवार से लेता है और दूसरा अपने विद्यालय से। परिवार का माहौल ऐसा होना चाहिए कि बालक में किसी भी प्रकार से अनुचित व्यवहार उत्पन्न न हो पाएँ तथा उसमें अच्छे संस्कार आएँ। शिक्षकों को भी विद्यार्थी में अच्छे संस्कार पल्लवित करने का प्रयास करते रहना चाहिए। अनुशासन की विद्या सीखकर विद्यार्थी अपनी

दिनचर्या को बोलचाल, व्यवहार, रहन- सहन, सोच-विचार आदि को व्यवस्थित करना सीखता है। अतः कहा जा सकता है कि जहाँ के विद्यार्थी अनुशासित होंगे वही राष्ट्र उन्नति करेगा क्योंकि देश की उन्नति की नींव विद्यार्थी जीवन में ही होती है।

12. दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर अवकाश हेतु प्रधानाचार्य जी को एक पत्र लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
राजधानी पब्लिक स्कूल,
इंदिरापुरम
नई दिल्ली।

विषय : अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा दसवीं **अ** का छात्र हूँ। दो दिन पूर्व बस से गिर जाने से मेरे पैर में काफी चोट लगने के कारण मैं अस्वस्थ हूँ तथा लगभग एक माह तक विद्यालय आने में असमर्थ हूँ। मैं अन्य यात्रियों के साथ बस में चढ़ने का प्रयास कर रहा था। अभी मैंने अपना पाँव पायदान पर पूरा रखा भी नहीं था कि चालक ने जोर से ब्रेक लगा दिया। तेज झटका लगने के कारण डंडा मेरे हाथ से छूट गया और मैं झटके से बस से नीचे गिर पड़ा। तभी एक स्कूटर मेरे पैरों को रोंदता हुआ आगे बढ़ गया। इस दुर्घटना में मेरे बाएँ पैर की हड्डी टूट गई। चिकित्सक महोदय ने मेरे पैर पर प्लास्टर चढ़ा दिया। प्लास्टर तीन सप्ताह बाद खुलेगा।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे एक माह का चिकित्सा अवकाश प्रदान करें। आपकी अति कृपा होगी।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
सुरेश
कक्षा दसवीं **अ**
अनुक्रमांक - XXX
दिनांक : 19 जुलाई, 2018

अथवा

निकट के प्रार्थना पूजाघरों में लाउडस्पीकर के मनमाने प्रयोग से होने वाली परेशानियों का उल्लेख करते हुए थानाध्यक्ष को एक पत्र लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

सेवा में,
थानाध्यक्ष महोदय,
सिविल लाइन्स,
भोपाल।
दिनांक : 24 फरवरी, 2018

विषय : पूजाघरों में लाउडस्पीकर के मनमाने प्रयोग की शिकायत।

श्रीमान,

मैं सिविल लाइन्स क्षेत्र के आवासीय क्षेत्र में बने प्रार्थना पूजाघरों में सदा ही लाउडस्पीकर के मनमाने प्रयोग से निवासियों को होने वाली परेशानियों की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। ये स्पीकर सुबह से देर रात तक बहुत जोर से बजते रहते हैं। इससे पढ़ने-लिखने वाले बच्चों, बीमार तथा वृद्धजनों को परेशानी हो रही है। घर में भी बातचीत करना मुश्किल हो रहा है। शिकायत करने पर पूजाघर कमेटी ध्यान नहीं देती। बच्चों की वार्षिक परीक्षा का समय निकट है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि इस संबंध में उचित कार्यवाही करते हुए इस पर रोक लगाएँ। क्षेत्र के निवासी आपके हार्दिक आभारी होंगे।

धन्यवाद।
भवदीय
कुशाग्र शर्मा
सी-6, रामपुर रोड,
नई दिल्ली-110004

13. किसी प्रकाशन समूह की हिंदी व्याकरण की पुस्तक के लिए 25-50 शब्दो में विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर :

संविता व्याकरण माला
नवीं एवं दसवीं कक्षा के लिए
(कोर्स-बी)
• सर्वश्रेष्ठ • आकर्षक • उपयोगी • नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित
शर्मा ब्रदर्स प्रकाशन
विक्रय एवं पंजीकृत कार्यालय
6/263, मैन मार्केट, बस स्टैण्ड के पास, जयपुर-302033

अथवा

किसी आयुर्वेदिक हैल्थ टॉनिक के लिए 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए।

उत्तर :

हर्बल सिरप
100% आयुर्वेदिक
दे आपको शक्ति, चाहे हो खेल-कूद या भक्ति।
इसे अपनाइए और सारे दर्द भूल जाइए
श्रेष्ठ हैल्थ टॉनिक
विशेष सुविधा का लाभ उठाइए
एक के साथ दूसरा मुफ़्त ले जाइए।
हैल्पलाइन : 09232124511